

[2023] 4 एस. सी. आर. 616

पुलेन फुकान और और अन्य

बनाम

असम का राज्य

(2016 की आपराधिक अपील क्र.906)

28 मार्च, 2023

[बी. आर. गवई, विक्रम नाथ और संजय करोल, जे. जे.]

दंड संहिता, 1860 : धारा 302, 326, 147, 148, 149, 447 और 34- हत्या - गैरकानूनी जमावड़ा - शिकायतकर्ता-पीडब्लू 1 का मामला वह 13 लोग उसके घर में घुस गए और उसे गंभीर चोट पहुंचाई जीजा पीडब्लू 2 और उनमें से तीन ने पीड़िता के साथ मारपीट की तेज धार वाले हथियारों से उसकी मृत्यु हुई - मुकदमा चलाया गया उनमें से 11 के खिलाफ - निचली अदालतों ने उन्हें धारा के तहत दोषी ठहराया। 147/148/ 447/323/302/149 के तहत आजीवन कारावास की सजा सुनाई। 302/149 आरोपित अपराध के लिए अन्य सजा के साथ - अपील पर, कहा गया: अभियोजन को शिकायतकर्ता की बात स्वीकार नहीं करनी है संस्करण सत्य है लेकिन जांच निष्पक्ष तरीके से की जानी चाहिए पारदर्शी तरीके से और सच्चाई का पता लगाना चाहिए - कोई स्पष्टीकरण नहीं पुलिस कर्मियों की मौजूदगी पर सफाई देने के लिए आगे आए हैं पूरी घटना के दौरान अभियोजन पक्ष का पूरा संस्करण गवाह है कि पुलिस कर्मी आरोपियों के साथ थे और मृतक के घर के बाहर खड़े थे, जो अभियोजन की कहानी की उत्पत्ति पर गंभीर संदेह पैदा करता है - प्रत्यक्षदर्शियों ने 13 आरोपियों के नाम नहीं लिए हैं व्यक्ति - चश्मदीद गवाहों द्वारा कोई बयान नहीं दिया गया कि सभी आरोपी व्यक्ति हत्या करने और घायलों पर हमला करने के एक सामान्य उद्देश्य के साथ आए थे - पीडब्लू-2 - यह नहीं कहा जा सकता है कि गैरकानूनी सभा के सभी सदस्यों को सामान्य उद्देश्य के बारे में पता था - यह यह नहीं कहा जा सकता है कि गैरकानूनी सभा हुई थी - इसके अलावा, चश्मदीद गवाहों के बयान में असंगतता - किसी भी आरोपी के कहने पर कोई बरामदगी नहीं - पीडब्लू 2 की चोटें साबित नहीं हुई क्योंकि कोई चोट रिपोर्ट नहीं थी - एफआईआर के मुंशी भी पेश नहीं किए गए और न ही हस्ताक्षरों से साबित हुआ - यह बहुत संभव है कि यह पुलिस द्वारा पूरी साजिश थी - हालांकि मौत हत्या थी लेकिन अभियोजन पक्ष ने अपीलकर्ताओं के खिलाफ उचित संदेह से परे मामला स्थापित नहीं किया है, इस प्रकार, संदेह का लाभ पाने का हकदार है - आदेश पारित हुआ उच्च न्यायालय द्वारा रद्द कर दिया गया।

अपील को अनुमति देते हुए, न्यायालय ने

अभिनिर्धारित: 1.1 अभियोजन पक्ष को स्वीकार नहीं करना है शिकायतकर्ता का बयान गॉस्पेल टुथ के रूप में है और उस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए लेकिन जांच निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से की जानी चाहिए और सच्चाई का पता लगाना चाहिए। जांच के दौरान एकत्र किए गए साक्ष्य का जांच अधिकारी द्वारा विश्लेषण किया जाना

चाहिए और तदनुसार दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 173 (2) के तहत एक रिपोर्ट प्रस्तुत की जानी चाहिए। इसके अलावा, निचली अदालत का कर्तव्य है कि वह सबूतों की सावधानीपूर्वक जांच करे, पता लगाने का प्रयास करे साक्ष्य के आधार पर सच्चाई सामने आई। जहां भी आवश्यकता हो। विचारण न्यायालय स्वयं उन तथ्यों और परिस्थितियों के संबंध में आगे की जाँच कर सकता है जो विचारण के दौरान न्यायालय के मन में संदेह पैदा कर सकते हैं। यदि जाँच अनुचित और कलंकित है तो निचली अदालत का कर्तव्य है कि वह उन सभी पहलुओं पर स्पष्टीकरण प्राप्त करे जो सामने आ सकते हैं या साक्ष्य द्वारा प्रतिबिंबित हो सकते हैं ताकि यह एक न्यायसंगत और निष्पक्ष निष्कर्ष पर पहुँच सके। यदि निचली अदालत इस शक्ति और विवेकाधिकार का प्रयोग करने में विफल रहती है तो निचली अदालत के फैसले को दूषित कहा जा सकता है। [पैरा 13] [628-एफ-एच]

1.2 तत्काल मामले में, मुखबिर-पीडब्लू-1, घायल चश्मदीद गवाह पीडब्लू-2, चश्मदीद गवाह पीडब्लू-3 और पीडब्लू-4 ने स्पष्ट रूप से कहा है कि पुलिस कर्मी आरोपी के साथ थे और वे पूरी घटना के दौरान वहाँ थे। इस तथ्य को निचली अदालत ने अपने फैसले में देखा है, लेकिन वह अभियोजन पक्ष से यह स्पष्टीकरण प्राप्त करने में विफल रही है कि आरोपी के साथ और बाहर खड़े पुलिस कर्मियों की उपस्थिति किस कारण हुई। मृतक का घर आरोपी को देखने के लिए पीडब्लू-2 पर हमला करता है और अपने भाई की हत्या करता है। निचली अदालत ने बिना गंभीरता से विचार किए इस मामले में बचाव पक्ष के तर्क को खारिज कर दिया था। [पैरा 14] [629-ए-बी]

1.3 यदि पुलिस कर्मी अपराध करने के समय मौजूद थे, तो उन्हें तुरंत कार्रवाई करते हुए आपराधिक तंत्र को सक्रिय करने के लिए पहले आरोपी को मौके से ही गिरफ्तार कर लेना चाहिए था, न कि उन्हें पुलिस के साथ थाने तक जाने देना चाहिए था। रास्ते में घायल पीडब्लू-2 पर हमला जारी रखना। अभियोजन पक्ष का पूरा बयान गवाह है कि पुलिस कर्मी आरोपी के साथ थे और घर मृतक की उत्पत्ति पर गंभीर संदेह पैदा करता है अभियोजन की कहानी। [पैरा 15] [629-सी-डी]

1.4 आई. पी. सी. की धारा 149 के अनुसार गैरकानूनी सभा के प्रत्येक सदस्य को उनके सामान्य उद्देश्य का पता होना चाहिए। सभा और सामान्य उद्देश्य के अभियोजन में किए जाने वाले अपराध की भी संभावना है। [पैरा 24] [631-डी]

1.5 किसी भी चश्मदीद ने उन सभी अभियुक्त व्यक्तियों का नाम नहीं लिया है जिनकी संख्या 13 बताई जाती है। केवल नाम 3-4 जिन अभियुक्त व्यक्तियों पर हमला किया गया है, उन्हें पकड़ लिया जाता है मृतक और घायल पीडब्लू-2। किसी भी चश्मदीद ने यह नहीं कहा है कि सभी आरोपी व्यक्ति हत्या करने और घायल पीडब्लू-2 पर हमला करने के एक समान उद्देश्य के साथ आए थे। किसी भी चश्मदीद गवाह द्वारा यह भी नहीं कहा गया है कि एक या कई या सभी अभियुक्तों द्वारा कोई बयान दिया गया था कि उन्हें ऐसा करना चाहिए। मृतक को हटा दें और घायल पीडब्लू-2 को चोट पहुँचाएं, इस बात का कोई सबूत नहीं है कि किसी भी आरोपी ने दूसरों को यह कहते हुए उकसाया कि उन्हें मृतक को खत्म करना है और घायलों पर हमला करना है (पीडब्लू-2)। इसके अलावा, चश्मदीद गवाह पीडब्लू-1, पीडब्लू-2 और पीडब्लू-3 द्वारा यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कम से कम पांच पुलिस कर्मी अभियुक्त के साथ थे और वे बाहर खड़े होकर कथित अपराध में हस्तक्षेप नहीं

किया। इस प्रकार, यह समझना मुश्किल है कि गैरकानूनी सभा के सभी सदस्य सामान्य उद्देश्य से अवगत थे। [पैरा 25] [631-ई-एच]

1.6 पीडब्लू-2 और पीडब्लू-3 ने कहा है कि पुलिस आरोपी के साथ मृतक और घायलों को गिरफ्तार करने आई थी। यही उद्देश्य था और पुलिस अभियुक्त व्यक्तियों की मदद ले रही थी, तब भी मृतक की हत्या के अपराध को करने के सामान्य उद्देश्य का तथ्य सामने नहीं आता है। यह हो सकता है कि अभियुक्त को ज्ञात सामान्य उद्देश्य था मृतक और घायल पीडब्लू-2 को गिरफ्तार किया गया क्योंकि उनके खिलाफ एक आरोपी पीपी द्वारा कुछ आपराधिक मामला दर्ज किया गया था। इसे ध्यान में रखते हुए यह नहीं माना जा सकता है कि आई. पी. सी. की धारा 149 के तहत दोषसिद्धि को बरकरार रखने के लिए एक गैरकानूनी सभा हुई थी। [पैरा 26] [632-ए-सी]

1.7 एफ. आई. आर. में, के और पी. पी. को हमले की कोई भूमिका नहीं सौंपी गई है। यह भूमिका एमपी, डी. पी. और एच. एस. को सौंपी गई है। पीडब्लू-1 ने लोहे की छड़ से पैर पर हमला किया और पी पी ने गर्दन पर हमला किया, उसने कहा है कि डी. पी. ने गर्दन पर हमला किया। पीडब्लू-2 ने कहा है कि के. ने मृतक को दाओ से मारा तो वह कहता है कि उसने नहीं देखा कि पी. आर. पी. पर हमला किसने किया और बाद में कहता है कि यह पी. पी. ही था जिसने मृतक पर प्रहार किया। पीडब्लू-3 ने कहा है कि के ने लोहे की छड़ से हमला किया और डी. पी. ने कुल्हाड़ी से गर्दन पर हमला किया। पीडब्लू-4 ने कहा है कि के ने लोहे की छड़ से पैर पर प्रहार किया और फिर डी. पी. ने कुल्हाड़ी से मृतक की गर्दन पर प्रहार किया। कोई पुनर्प्राप्ति नहीं है साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के तहत किसी भी अभियुक्त का उदाहरण। साक्ष्य के अनुसार, कुल्हाड़ी मृतक के शव पर छोड़ दी गई थी। जो बात स्पष्ट है वह यह है कि के का नाम प्राथमिकी में शामिल नहीं किया गया था, लेकिन उनका नाम लगातार दर्ज किया गया है। मृतक पर पहले लोहे की छड़ से हमला करने के प्रत्यक्षदर्शी। जहाँ तक पी. पी. का संबंध है, उसका नाम पी. डब्ल्यू-1 और पी. डब्ल्यू-2 ने गर्दन पर हमला करने के लिए लिया है और पी. डब्ल्यू-3 और पी. डब्ल्यू-4 ने डी. पी. का नाम गर्दन पर प्रहार करने के लिए लिया है। इस प्रकार, चश्मदीद गवाहों के बयान में भौतिक विसंगति है। [पैरा 27] [632-सी-जी]

1.8 पीडब्लू-1, पीडब्लू-2, पीडब्लू-3 और पीडब्लू-4 के साक्ष्य से ध्यान देने योग्य एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि के. द्वारा लोहे की छड़, पीआरपी से मारे जाने के बाद, मृतक को कमरे में प्रवेश करने के लिए संघर्ष करना पड़ा और

1.9 सबूत पूरे अभियोजन पक्ष की कहानी पर बहुत गंभीर संदेह पैदा करते हैं। यह काफी संभव है कि पुलिस कर्मसंबंधित पुलिस स्टेशन के अधिकारी मृतक और उसके भाई को गिरफ्तार करने के लिए वहां थे और उस प्रक्रिया में कुछ प्रतिरोध के परिणामस्वरूप पीड़ित की मौत हो सकती है। पीडब्लू2 की चोटें साबित नहीं हुई हैं क्योंकि माना जाता है कि कोई चोट की रिपोर्ट नहीं थी। यहां तक कि एफ. आई. आर. के लेखक को भी पेश नहीं किया गया है मृतक को गिरफ्तार करने की प्रक्रिया में हत्या, और उसके बाद, दोनों पक्षों के बीच दुश्मनी को जानते हुए, आरोपी के खिलाफ एक झूठा मामला दर्ज किया। जाहिर तौर पर पुलिस कर्मियों की उपस्थिति के बारे में कोई स्पष्टीकरण सामने नहीं आया है पूरी घटना के दौरान स्टेशन। [पैरा 29] [633-सी-ई]

1.10 अभियोजन पक्ष ने जगह स्थापित नहीं की है घटना के स्थान से रक्त से सना हुआ पृथ्वी एकत्र करने के किसी भी भौतिक प्रदर्शन द्वारा घटना। यहाँ तक कि सामग्री भी प्रदर्शन, कुल्हाड़ी, जिसके बारे में कहा जाता है कि पुलिस द्वारा हिरासत में लिया गया था, चाहे वह घटना की तारीख पर हो या उसके दो दिन बाद भी पेश नहीं किया गया है और न ही कोई सबूत उस प्रभाव का कारण बना है। यह अभी भी एक रहस्य है कि जांच अधिकारी ने अपनी जांच कैसे पूरी की बयान में कहा गया है कि उन्होंने आठ के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था, अभियुक्त में पाँच फरार थे और तीन और अभियुक्तों को गिरफ्तार करने और मुकदमा चलाने के बारे में आगे कोई बयान नहीं है, कैसे निचली अदालत ने 11 अभियुक्तों को दोषी ठहराया और केवल दो को फरार होने के लिए निर्धारित किया गया था। यहां तक कि एफ. आई. आर. के पत्रकार से भी पूछताछ नहीं की गई है। यह अत्यंत प्रासंगिक था जब पीडब्लू-1 ने कहा कि उसे प्राथमिकी की सामग्री के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। [पैरा 30] [633-ई-जी]

1.11 हालाँकि पीड़ित की मृत्यु हत्या थी लेकिन यह आश्चर्य करने वाला नहीं है कि अभियोजन पक्ष ने मामले को स्थापित कर दिया है अभियुक्त अपीलार्थियों के विरुद्ध उचित संदेह से परे। अपीलार्थी संदेह के लाभ के हकदार होंगे। दोषसिद्धि और सजा को दरकिनार कर दिया जाता है। [पैरा 31] [633-एच; 634-ए]

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय: आपराधिक अपील 2016 का क्र.906

2014 के सी. आर. एल. ए. No.113 में अगरथला में गुवाहाटी उच्च न्यायालय के दिनांकित 21.11.2015 के निर्णय और आदेश से।

संजय आर. हेगड़े, वरिष्ठ अधिवक्ता, अजीम एच. लस्कर, विकास कर गुप्ता, एस. के. बिस्वाल, सुश्री देबरती साधु, शाहरुख अली, चंद्र भूषण प्रसाद, राघव गुप्ता, सुश्री देबंजना राय चौधरी, अधिवक्ता अपीलार्थियों के लिए।

देबोजीत बोरकाकाटी, अधिवक्ता उत्तरदाता के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

विक्रम नाथ, जे।

1. अपीलकर्ताओं ने आपराधिक अपील क्रमांक 113/2014 - पुलेन फुकन और 10 अन्य बनाम असम राज्य में गौहाटी उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय और आदेश दिनांक 21.11.2015 की शुद्धता पर सवाल उठाया है, जिसके तहत ट्रायल कोर्ट के फैसले और आदेश की पुष्टि करते हुए अपील खारिज कर दी गई थी। यानी डिब्रूगढ़ के सत्र न्यायाधीश ने 2000 के सत्र मामले संख्या 27 में पारित किया, जिसके तहत 11 आरोपियों को भारतीय दंड संहिता, 1860 की धारा 147/148/447/323/302/149 के तहत दोषी ठहराया गया और धारा 302/149 आईपीसी के तहत आजीवन कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। धारा 147/148/447/323 आईपीसी के तहत छह महीने के लिए कठोर कारावास। इसके अलावा 11 आरोपियों में से प्रत्येक पर 1,000/- रुपये का जुर्माना लगाया गया और जुर्माना अदा न करने पर एक महीने की अतिरिक्त कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

2. यहां यह ध्यान देने योग्य होगा कि हालांकि 13 में से 11 अभियुक्तों के खिलाफ मुकदमा चलाया गया था और उन सभी को उपरोक्त के रूप में दोषी ठहराया गया था और सजा सुनाई गई थी, सभी 11 दोषी अभियुक्तों ने उच्च न्यायालय के समक्ष अपील की थी जिसे खारिज कर दिया गया था। तथापि, इस न्यायालय के समक्ष ऐसे अभियुक्तों में से केवल चार ने अपील की है, अर्थात्: पुलेन फूकन (आरोपी नं. 1), जितन फूकन (आरोपी संख्या 3), मृदुल सैकिया @मिदुल सैकिया (आरोपी संख्या 5) और मोजेन फूकन (आरोपी संख्या 2)। तेरह अभियुक्तों में से दो धजेन फूकन और मुहिराम फूकन फरार रहे और उनके संबंध में कोई गिरफ्तारी या मुकदमा रिकॉर्ड पर नहीं है।
3. अभियोजन पक्ष की कहानी 13 जून, 1989 को पुलिस स्टेशन चबुआ, जिला डिब्रूगढ़ में प्रथम सूचना रिपोर्ट 2 दर्ज करने के साथ शुरू होती है। श्रीमती नरेश्वरी फूकन (पीडब्लू 1) द्वारा सूचित। यह एक बहुत ही छोटी और स्पष्ट एफ. आई. आर. है जिसमें कहा गया है कि दोपहर 12 बजे 13.06.1989 के आसपास गाँव के तेरह निवासी उसके घर आए, बिना किसी कारण के उसके घर की घेराबंदी कर दी और उसके बहनोई रोबी फूकन (पी. डब्ल्यू. 2) के सिर पर धारदार हथियारों से वार करके गंभीर चोट पहुँचाई और तीन आरोपी व्यक्तियों, मोजेन फूकन, दुलेन फूकन और हरेन सैकिया ने प्रदीप फूकन पर धारदार हथियारों से हमला करके उसकी हत्या कर दी, उक्त घटना के संबंध में आवश्यक कार्रवाई की जा सकती है। यह धाराओं के तहत चबुआ केस क्रमांक. 70/89 के रूप में दर्ज किया गया था। 147/ 148, 149, 447, 302, 326, 34 आईपीसी. पुलिस मौके पर पहुंची, आवश्यक पूछताछ की और औपचारिकताएं पूरी करने के बाद मृतक का शव-पोस्टमार्टम के लिए। उन्होंने घटनास्थल से कुछ सामग्री भी एकत्र की जिसके लिए वसूली ज्ञापन तैयार किए गए और सामग्री को हिरासत में लिया गया। जाँच पूरी करने के बाद, 3 मई, 1991 को आठ अभियुक्तों, मोजेन फूकन, मृदुल सैकिया, कुलेश्वर चेतिया, पुलेन फूकन, बरेन सैकिया, दुलेन फूकन, किरण सैकिया और हरनाथ सैकिया के खिलाफ आरोप पत्र प्रस्तुत किया गया था। पांच अभियुक्तों को गिरफ्तार नहीं किया जा सका क्योंकि उन्हें फरार होने के कारण मुकदमे के लिए नहीं भेजा गया था, अर्थात्, जितन फूकन, धजेन फूकन, मुहिराम फूकन, हरेन सैकिया और जीवन चेतिया। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी स्तर पर तीन और अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें भी मुकदमे के लिए भेजा गया। फरार चल रहे दो आरोपी धजेन फूकन और मुहिराम फूकन हैं। आरोप-पत्र आई. पी. सी. की धारा 147, 148, 149, 447, 448, 324, 326 और 303 के तहत मुकदमे के लिए प्रथम दृष्टया मामले का पता लगाने के लिए प्रस्तुत किया गया था। अभियुक्तों के सामने आरोप पढ़े गए जिन्होंने खुद को निर्दोष बताया और मुकदमा चलाने का दावा किया।
4. अभियोजन पक्ष ने सात गवाहों से पूछताछ की और चार गवाह भी दाखिल किए आरोपों को साबित करने के लिए दस्तावेजी साक्ष्य। सात गवाह इस प्रकार हैं:
- पीडब्लू 1-सूचना देने वाला और चश्मदीद गवाह: श्रीमती. नरेश्वरी फूकन (मृतक की साली);
 - पीडब्लू 2-चश्मदीद गवाह और घायल: रोबी फूकन (मृतक के भाई)
 - पीडब्लू 3-चश्मदीद गवाह: श्रीमती. जोगमाया फूकन (मृतक की साली)
 - पीडब्लू 4-मृतक के रिश्तेदार, श्रीमती अंजना फूकन,

- v. पीडब्लू 5-मृतक के रिश्तेदार भुवन फूकन;
- vi. पीडब्लू 6-डॉ. नीलेश्वर सोनोवाल, मृतक के मृत शरीर पर शव परीक्षण करने वाले ; और
- vii. पीडब्लू 7-निलो चिरिंग, जाँच अधिकारी जो आरोप पत्र प्रस्तुत किया (उदा.-4).

5. अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत और साबित किए गए दस्तावेजी साक्ष्य हैं:

- i. एफ. आई. आर. (एजाहार)- प्रदर्श.-1 ;
- ii. कुल्हाड़ी का कब्जा- प्रदर्श -2 ;
- iii. पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट- प्रदर्श.-3 ;
- iv. चार्ज-शीट- प्रदर्श -4 .

6. विचारण न्यायालय और उच्च न्यायालय इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अभियोजन पक्ष के नेतृत्व में साक्ष्य निर्विवाद था और पूर्व में बताए गए अनुसार दोषसिद्धि और सजा को सावधानीपूर्वक दर्ज किया।

7. पक्षों के लिए विद्वान परामर्श सुना और सामग्री तार का अध्ययन किया।

8. अपीलार्थियों के विद्वान वकील ने निम्नलिखित मुद्दे दिया

ए.अभियोजन पक्ष निष्पक्ष और ईमानदार तरीके से आगे नहीं आया है निम्नलिखित कारणों से:

- i. एफ. आई. आर. बहुत ही अस्पष्ट है। पहले सूचना देने वाले का बयान(पीडब्लू-1) विचारण न्यायालय के समक्ष एक स्पष्ट सुधार है, एफ. आई. आर. में उल्लिखित संस्करण।
- ii. पीडब्लू-1, पीडब्लू-2 और पीडब्लू-3 ने साफ कहा कि जिस वक्त घटना हुई उस वक्त कम से कम पाँच पुलिसकर्मी मौजूद थे। यह भी कहा गया है कि आरोपी के साथ पुलिसकर्मी भी गए थे। पूरे घटनाक्रम के दौरान पुलिस की मौजूदगी के संबंध में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है
- iii. अगर पुलिस कर्मी घर के बाहर मौजूद थे मृतक को तब मामले की सूचना दी जानी चाहिए थी उनके द्वारा घटना के बारे में पीडब्लू-1 के बजाय एफ. आई. आर. दर्ज करने के लिए पुलिस स्टेशन। आरोपी पुलिस के साथ थाने पहुंचा
- iv. आरोपी पुलिस के साथ पीडब्लू-2 के साथ पुलिस स्टेशन गया, जिसके साथ रास्ते में मारपीट की गई।
- v. पुलिस कर्मियों, जिनकी संख्या पाँच थी, ने आरोपियों को पकड़ने का कोई प्रयास क्यों नहीं किया और न केवल उन्हें मुक्त छोड़ दिया बल्कि उनके साथ पुलिस स्टेशन भी गए?

बी. यह दिखाने के लिए कोई सबूत नहीं है कि सभी आरोपी अपराध के संबंध में एक सामान्य उद्देश्य के साथ आते हैं, और यदि ऐसा किया जाता है तो आई. पी. सी. की धारा 147, 148 और 149 को लागू करना कानून में असमर्थनीय होगा। आई. पी. सी. की धारा 142 के तत्व किसी भी साक्ष्य से स्थापित नहीं होते हैं।

सी. प्रत्यक्षदर्शी के साक्ष्य में भौतिक असंगति हैं पीडब्लू-1 से पीडब्लू-4 तक के गवाह जो उनकी गवाही को पूरी तरह से बदनाम करते हैं, न केवल इस कारण से कि वे मृतक के रिश्तेदार होने के नाते इच्छुक गवाह हैं,

बल्कि साक्ष्य की सावधानीपूर्वक जांच पर भी उनकी गवाही को विश्वसनीय नहीं माना जा सकता है। आपराधिक प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 161 के तहत पीडब्लू-1 से पीडब्लू-4 के बयानों की तुलना में पीडब्लू-1 की आगे की गवाही काफी असंगत है।

डी. यह पुलिस के हाथों झूठा फंसाने का स्पष्ट मामला है:

- i. पूरी घटना के दौरान पुलिस मौजूद थी, जिसकी मौजूदगी के बारे में स्पष्ट नहीं किया गया है।
- ii. एफ. आई. आर. एक एम. डी. माजिद सिकंदर द्वारा लिखी गई है। जिनका सबूतन केवल पुलिस केस डायरी में दर्ज किया गया है, बल्कि रिपोर्ट को साबित करने के लिए परीक्षण के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।
- iii. पहली सूचना देने वाली ने स्पष्ट रूप से कहा है कि वह नहीं जानती थी एफ. आई. आर. की सामग्री उसी के रूप में उसे नहीं पढ़ी गई थी और उसने केवल अपने हस्ताक्षर किए थे जहाँ वह थी।

9. दूसरी ओर, राज्य के विद्वान वकील-प्रतिवादी ने प्रस्तुत किया कि; परीक्षण न्यायाधीश के नीचे के दोनों न्यायालयों के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने अभिलेख पर भौतिक साक्ष्य पर विचार करने के बाद, दोषसिद्धि पर समवर्ती निष्कर्ष दर्ज किए हैं और इस प्रकार इस न्यायालय द्वारा किसी भी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होगी।

10. अभियोजन पक्ष के नेतृत्व में साक्ष्य के विश्लेषण के साथ आगे बढ़ने से पहले, सात गवाहों में से प्रत्येक की गवाही संक्षेप में दी जाती है, यहाँ दर्ज किया गया है:

10.1 पहली सूचना देने वाली पीडब्लू-1 अपना बयान यह कहते हुए खोलती है कि वह अभियुक्त व्यक्तियों को नाम और चेहरे से जानती है। वह आगे कहती है कि वह अपने बयान के दिन कठघरे में मौजूद आरोपी व्यक्तियों को जानती है; दो फरार आरोपी धजेन और मुहिराम मौजूद नहीं हैं; वह फिर प्राथमिकी की सामग्री को दोहराती है; जबकि रोबी फूकन (पीडब्लू 2) पर हमला किया जा रहा था, मृतक अदालत के पिछले प्रांगण से भाग गया; आरोपी व्यक्तियों ने मृतक का पीछा किया जो अंजना फूकन (पीडब्लू 4) के घर में घुस गया; उसने आरोपी व्यक्तियों का पीछा किया जो अंजना फूकन (पीडब्लू 4) के घर में भी घुस गए; कि कुलेश्वर ने मृतक पर लोहे की छड़ से हमला किया और पुलेन फूकन ने मृतक की गर्दन पर वार किया, जिसके परिणामस्वरूप वह नीचे गिर गया। इसके बाद आरोपी वहाँ से चला गया। वह तब कहती है कि जबकि अभियुक्त व्यक्ति पुलिस स्टेशन ले जाया गया वह जोगमाया फूकन (पीडब्लू 3) के साथ पुलिस स्टेशन आई जहाँ प्राथमिकी लिखी गई थी और उसने अपने अंगूठे का निशान लगाया; वह प्राथमिकी पर अपने अंगूठे का निशान साबित करती है जिसे पूर्व के रूप में चिह्नित किया गया है। प्रदर्श -1 ; इसके बाद वह मिशन अस्पताल के लिए आगे बढ़ती है जहाँ मृतक का शव पहुंचा था। अपनी प्रतिपरीक्षा में वह बताती है कि चबुआ पुलिस स्टेशन लगभग 3 किलोमीटर दूर है। अपने घर से दूर; वह लगभग 3 से 4 बजे पुलिस स्टेशन पहुंची; उसने एक्स नहीं पढ़ा। प्रदर्श -1 जो पुलिस स्टेशन में लिखा गया था और केवल उसके हस्ताक्षर थे उस पर प्राप्त; यह भी उसे पढ़ा नहीं गया था; वह नहीं जानती कि उसमें क्या लिखा है; पुलिस ने उससे पूछताछ नहीं की। फिर वह हमले के गलत होने के सुझाव से इनकार करती है। अंत में वह बताती है कि घटना की तारीख को पुलिस आरोपी के साथ थी।

10.2 पीडब्लू 2-मृतक का भाई रोबी फूकन एक प्रत्यक्षदर्शी है। गवाह के घायल होने का भी आरोप है। उनके अनुसार, मृतक, उसकी माँ और उसकी पत्नी जोगमाया और वह खुद दोपहर लगभग 12 बजे घर पर मौजूद थे, जब दाओ आदि से लैस आरोपी व्यक्ति उनके घर आए और प्रदीप (मृतक) के बारे में पूछताछ की। आरोपी व्यक्तियों को आते देख मृतक घर के पिछले दरवाजे से बाहर निकला तो आरोपी व्यक्तियों ने उसका पीछा किया। मृतक ने भुवन (पीडब्लू-5) के घर में प्रवेश किया (जो अंजना (पीडब्लू-4) के घर के समान है क्योंकि वे पति-पत्नी हैं)। आरोपी ने भुवन के घर में भी प्रवेश किया और मृतक प्रदीप पर हमला किया। कुलेश्वर ने उसे मारा। एक दाओ के साथ जब वह प्रवेश करने की कोशिश कर रहा था। फिर मैंने नहीं देखा कि मृतक की गर्दन पर दाउ से हमला किसने किया। इसके बाद आरोपी लोग आए। उसके पास गया और लाठी से हमला करके घायल कर दिया। कुछ देर बाद पुलिस वहाँ पहुँची और उसे इलाज के लिए अस्पताल ले गई। उन्होंने आगे कहा कि उनके सिर और हाथों पर चोटें आई हैं। जिरह में वह कहता है कि पुलिस ने घटना के संबंध में उससे पूछताछ नहीं की। जब आरोपी लोग आए तो वह घर के बाहर था। हालांकि, आरोपी व्यक्तियों को घर में प्रवेश करते देख वह भी अंदर आ गया। जब मृतक का आरोपी पीछा कर रहा था तो वह बाहर आ गया। फिर वह कहता है कि पुलिस कर्मियों और अभियुक्त व्यक्तियों ने दावा है कि उसने अपने भाई की हैकिंग देखी है। वह इस सुझाव से इनकार करता है कि वास्तव में उसने कुछ भी नहीं देखा था। वह स्वीकार करता है कि पुलिस के सामने उसने यह नहीं कहा था कि कुलेश्वर और धुले ने मृतक पर हमला किया था। वह आगे कहता है कि पुलिसकर्मी आरोपी के साथ उसके घर आए थे। एक और प्रासंगिक तथ्यजिस बात का उन्होंने जिरह में उल्लेख किया है कि उनके भाई की हत्या की घटना से पहले पुलिस ने पुलेन फूकन द्वारा लगाए गए आरोप के आधार पर उनके खिलाफ मामला दर्ज किया था। वे अदालत में पेश हुए थे जब पुलिस उनकी तलाश कर रही थी। घटना के दिन पुलिस आरोपी के साथ उसके और उसके भाई (मृतक) की तलाश में उसके घर आई।

10.3 जोगमाया फूकन (पीडब्लू-3) रोबी फूकन (पीडब्लू-2) की पत्नी हैं उसने ऐसा ही बयान दिया है कि जब वह अपने पति के साथ घर पर बैठी थी, तो मृतक और उसकी सास दोपहर लगभग 12 बजे दाओ और कुल्हाड़ी से लैस आरोपी व्यक्ति उनके घर आए। उन्हें देखकर मृतक पिछले दरवाजे से बाहर निकला और अंजना के घर में घुस गया। उसका पीछा करने वाले आरोपी अंजना के घर में भी घुस गए। उसने कुलेश्वर को मृतक पर लोहे की छड़ से हमला करते हुए और डलेन को कुल्हाड़ी से गर्दन पर हमला करते हुए देखा। गर्दन शरीर से लगभग अलग हो चुकी थी और लटक रही थी। आरोपी व्यक्ति उसके पति रोबी फूकन (पीडब्लू 2) को पुलिस स्टेशन ले गए और उसके साथ दुर्यवहार किया। वह अभियुक्तों के साथ उसके घर आने वाले पुलिस कर्मियों के बारे में भी बताती है और वे घटना के गवाह हैं। उसके अनुसार, पुलिस ने उससे पूछताछ नहीं की। वह आगे बताती है कि 5-6 लोग उस कमरे में घुस गए हैं जहाँ मृतक पर हमला किया गया था। वह यह भी कहती है कि उसने उक्त कमरे में प्रवेश नहीं किया था। वह आगे बताती है कि पुलिस उसके पति और मृतक को पकड़ने आई थी।

10.4 अंजना फूकन (पीडब्लू-4) ने कहा है कि वह आरोपी व्यक्तियों के साथ-साथ मृतक को भी जानती है जो संबंध में उसके बहनोई थे। उनका घर पड़ोस में है और वे साझा सीमा साझा करते हैं। घटना के दिन दोपहर लगभग 12 बजे उसने बाहर कुछ आवाज सुनी और उसने मृतक को जल्दबाजी में उसके घर में प्रवेश करते देखा और उसका पीछा कर रहे आरोपी कुलेश्वर पर लोहे की छड़ से हमला किया। इसके बावजूद मृतक घर में घुस

गया और फिर डलेन फूकन ने कुल्हाड़ी से मृतक की गर्दन पर हमला किया, जिसके परिणामस्वरूप वह तुरंत नीचे गिर गया। गर्दन लगभग कट चुकी थी और उसकी तुरंत मौत हो गई। इसके बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। हालाँकि वह बताती है कि वह शाम करीब 4 बजे तक शव के साथ घर पर रही जब पुलिस आई और शव को ले गई। उनके दो छोटे बच्चों को पुलेन फुकन और ओआरएस ले जाया गया था। उसकी माँ उसके घर चली गई; उसका पति घर पर नहीं था। वह यह भी बताती है कि आरोपी ने कुल्हाड़ी छोड़ दी थी जो मृतक के शरीर पर हमले का हथियार था। वह आगे कहती है कि उसने वसूली ज्ञापन (प्रदर्श-2) अपनी प्रतिपरीक्षा में उसने कहा कि उन्होंने कुलेश्वर, दुलेन फूकन और पुलेन फूकन और उनके साथ पांच पुलिस कर्मियों को भी देखा था। बचाव पक्ष द्वारा दिए गए विभिन्न सुझावों को उन्होंने अस्वीकार कर दिया। वह यह भी कहती है कि जब्त की गई वस्तुओं को अदालत में पेश नहीं किया गया है और न ही उसने उन्हें देखा है।

10.5 भुवन फूकन (पीडब्लू-5) चश्मदीद गवाह नहीं हैं। उन्होंने केवल इतना कहा है कि वे शाम को काम करने के बाद लौट आए थे।

जानते हैं कि प्रदीप फूकन की उनके घर के अंदर हत्या कर दी गई थी। वह आगे बताता है कि उसकी पत्नी और बच्चे अपने मायके चले गए थे। वह यह भी कहता है कि घटना के दो दिन बाद पुलिस उसके घर गई और एक कुल्हाड़ी ले गई और वह पूर्व पर अपने हस्ताक्षर साबित करता है (प्रदर्श-2) .

10.6 डॉ. नीलेश्वर सोनोवाल (पीडब्लू-6) ने शव परीक्षण किया और निम्नलिखित पूर्व-शव परीक्षण चोटों को देखा:

"चोट:

- i. गर्दन के पीछे दाहिनी ओर ग्रीवा कशेरुकाओं का 10 सेमी x 3 सेमी x 6 सेमी का कटा हुआ घाव। त्वचा, मांसपेशियाँ, वाहिकाएँ, नसें और छठी ग्रीवा कशेरुक पूरी तरह से कट गई और रीढ़ की हड्डी थोड़ी सी कट गई।
- ii. स्कैपुलर सिरे पर 4 x 2 सेमी x हड्डी का गहरा घाव हंसली कट गई।
- iii. पार्श्व भाग में 4 x 2 सेमी x हड्डी गहरा चीरा हुआ घाव बायीं कोहनी, बेवेल्ड कट, चीरा हुआ घाव 9 x 3 सेमी x त्वचा में कटा हुआ बायां अस्थायी क्षेत्र।
- iv. बाएं निपल के नीचे 3 x 3 सेमी चोट के निशान।
- v. आंतरिक कांख में 11 वीं दाहिनी पसली पर 3 x 2 सेमी चोट के निशान रेखा।"

उन्होंने कहा है कि शव को अस्पताल में दोपहर 1 बजे 13.06.1989 पर प्राप्त किया गया था और सुबह 11 बजे 14.06.1989 पोस्टमार्टम किया गया था।

10.7 पीडब्लू-7 जांच अधिकारी है जिसने आरोप पत्र प्रस्तुत किया था। उनके अनुसार, जांच सब इंस्पेक्टर धीरेंद्र नाथ सैकिया द्वारा की गई थी और उनके स्थानांतरण के बाद इसे सौंपा गया था। फिर वह कहता है कि तेरह में से आठ अभियुक्तों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया गया था और पाँच फरार बताए गए थे। वह यह भी कहता है कि उसने फरार आरोपी को गिरफ्तार करने के कई प्रयास किए लेकिन वह नहीं कर सका

11. अभियुक्तों ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत अपने बयानों में विशेष रूप से कुछ नहीं कहा है और अपनी संलिप्तता से इनकार किया है। घटना में। बचाव में कोई सबूत नहीं दिया जाता है।

12. सबूतों को देखने के बाद न केवल जो उपलब्ध है अपील के अभिलेख पर लेकिन मूल अभिलेख को भी देखने के बाद, उसका हमारा विश्लेषण इस प्रकार है:

13. अभियोजन पक्ष का काम शिकायतकर्ता के बयान को सत्य के रूप में स्वीकार करना और उस दिशा में आगे बढ़ना नहीं है, लेकिन जांच निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से की जानी चाहिए और सच्चाई का पता लगाना चाहिए। जाँच के दौरान एकत्र किए गए साक्ष्य का जाँच अधिकारी द्वारा विश्लेषण किया जाना चाहिए और तदनुसार दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 173 (2) के तहत एक रिपोर्ट प्रस्तुत की जानी चाहिए। इसके अलावा, विचारण न्यायालय का कर्तव्य है कि वह साक्ष्य की सावधानीपूर्वक जांच करे, साक्ष्य के आधार पर सच्चाई का पता लगाने का प्रयास करे। जहां भी आवश्यक हो, विचारण न्यायालय स्वयं उन तथ्यों और परिस्थितियों के संबंध में आगे की जांच कर सकता है जो विचारण के दौरान न्यायालय के मन में संदेह पैदा कर सकते हैं। यदि जांच अनुचित और दूषित है तो यह ट्रायल कोर्ट का कर्तव्य है कि वह उन सभी पहलुओं पर स्पष्टीकरण जो साक्ष्य द्वारा सामने आ सकते हैं या प्रतिबिंबित हो सकते हैं ताकि वे एक न्यायसंगत और निष्पक्ष निष्कर्ष पर पहुँच सकें। यदि विचारण न्यायालय इस शक्ति और विवेकाधिकार का प्रयोग करने में विफल रहता है तो परीक्षण न्यायालय के निर्णय को दूषित कहा जा सकता है।

14. वर्तमान मामले में, मुखबिर (पीडब्लू-1), घायल चश्मदीद गवाह (पीडब्लू-2), चश्मदीद गवाह (पीडब्लू-3) और चश्मदीद गवाह (पीडब्लू-4) ने स्पष्ट रूप से कहा है कि पुलिस कर्मी उनके साथ थे। आरोपी और वे पूरी घटना के दौरान वहीं थे। ट्रायल कोर्ट ने अपने फैसले में इस तथ्य पर ध्यान दिया, लेकिन अभियोजन पक्ष से यह स्पष्टीकरण प्राप्त करने में विफल रहा कि आरोपी के साथ पुलिस कर्मियों की उपस्थिति और आरोपी के हमले को देखने के लिए मृतक के घर के बाहर खड़े होने का क्या कारण था। पीडब्लू-2 और उसके भाई की हत्या कर दो। ट्रायल कोर्ट ने गंभीरता से विचार किए बिना इस संबंध में बचाव पक्ष के तर्क को खारिज कर दिया था।

15. यदि पुलिस कर्मी अपराध के समय मौजूद थे, तो उन्हें तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए थी। रास्ते में घायल (पीडब्लू-2) पर हमला जारी रखते हुए पुलिस के साथ पुलिस स्टेशन तक जाने की अनुमति देने के बजाय पहले आरोपी को मौके से ही गिरफ्तार करके आपराधिक तंत्र चल रहा है। अभियोजन पक्ष का पूरा बयान गवाह है कि पुलिस कर्मी आरोपी के साथ थे और मृतक के घर के बाहर खड़े थे, जिसकी उत्पत्ति पर अभियोजन की कहानी पर गंभीर संदेह पैदा होता है।

16. चश्मदीद गवाह पीडब्लू-1 के साक्ष्य पर आते हुए, सूचना देने वाली ने अपनी रिपोर्ट में किसी भी आरोपी को कोई विशिष्ट भूमिका नहीं सौंपी है। यह केवल उसने बताया कि 13 लोग उसके घर आए, उनमें से कुछ ने उसका पीछा किया और मृतक का पीछा किया जो पिछले आंगन से भागकर पड़ोसी के घर में घुस गया और खुद को बचाने की कोशिश कर रहा था, जहां उसकी हत्या कर दी गई। एफ. आई. आर. के अनुसार यह भूमिका मोजेन फूकन, दुलेन फूकन और हरेन सैकिया को दी गई है। हालाँकि, मुकदमे में अपने बयान में उसने कहा है कि

कुलेश्वर ने लोहे की छड़ से हमला किया, जबकि पुलें फूकन ने मृतक की गर्दन पर चोट पहुंचाई। दिलचस्प बात यह है कि वह यह भी कहती है कि आरोपी व्यक्तियों को पुलिस स्टेशन ले जाया गया था। वह जोगमाया के साथ वहां आई और प्राथमिकी दर्ज कराई। (प्रदर्श -1) जो पुलिस स्टेशन में लिखा गया था। अपनी प्रतिपरीक्षा में, वह कहती है कि उसने एक्स नहीं पढ़ा था। प्रदर्श-1, यह पुलिस स्टेशन में लिखा गया था और उसने केवल अपने हस्ताक्षर किए थे। प्रदर्श-1 उसे पढ़ा नहीं गया था, वह उसी की सामग्री नहीं जानती थी। फिर वह बताती है कि अभियुक्तों के साथ पुलिस भी थी।

17. पीडब्लू-1 का कथन मुख्य रूप से कई कारणों में से दो कारणों से विश्वास को प्रेरित नहीं करता है। सबसे पहले, कि एफ. आई. आर. संस्करण और मुकदमे के दौरान बयान भौतिक रूप से अलग हैं और दूसरा, एक बार मृतक पीडब्लू-4 के घर के पिछले दरवाजे से भाग गया था और पीडब्लू-5, उसके बाद कुछ अभियुक्त, पीडब्लू-1 को पीडब्लू-4 और पीडब्लू-5 के घर पहुंचने का मौका नहीं मिलेगा, जहां वास्तविक हमला हुआ था और जिस तरह से अपराध किया गया था, उसे देखने का मौका नहीं मिलेगा। इसलिए, यह एक प्रशिक्षित संस्करण प्रतीत होता है।

18. मृतक के भाई रोबी पुखान (पीडब्लू-2) ने भी घटना को नहीं देखा है। उनके अनुसार, शुरू में वह बाहर खड़े थे उसका घर। इसके बाद जब आरोपी उसके घर में घुसा तो वह अंदर आया और तब तक प्रदीप फूकन (मृतक) पिछले दरवाजे से पीडब्लू-4 और पीडब्लू-5 के घर भाग गया था और जब उसने प्रदीप फूकन का पीछा करने की कोशिश की तो पुलिस और अन्य आरोपी व्यक्तियों ने उसे रोक दिया। उनका कहना था कि उन्हें आरोपी से चोटें आई थीं जब उन्होंने मृतक पर हमला किया था, जबकि दूसरे चश्मदीद गवाह पीडब्लू-1 ने कहा कि पीडब्लू-2 पर मृतक के साथ हमला किया गया था। वह आगे कहता है कि पुलिस वहाँ आई और उसे अस्पताल ले गई; उसके सिर और हाथ पर चोटें आईं। उन्होंने फिर कहा कि पुलिसकर्मी आरोपी के साथ आए थे। दिलचस्प बात यह है कि रिकॉर्ड पर कोई चोट की रिपोर्ट नहीं है। जाँच अधिकारी (पीडब्लू-7) ने विशेष रूप से कहा था कि अपने सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, वह पीडब्लू-2 की कोई चिकित्सकीय-कानूनी रिपोर्ट प्राप्त नहीं कर सके। अतः पीडब्लू-2 की उपस्थिति भी संदिग्ध है।

19. पीडब्लू-2 की पत्नी जोगमाया (पीडब्लू-3) ने घटना का एक अलग संस्करण दिया है। उसके अनुसार, आरोपी व्यक्तियों ने उसके पति का पीछा किया और उस पर हमला किया और फिर आरोपी व्यक्ति उसके पति को पुलिस स्टेशन ले गए और पूरे समय उस पर हमला किया। इसके बाद, वह पीडब्लू-1 के साथ प्राथमिकी दर्ज करने के लिए पुलिस स्टेशन आई। उसने यह भी स्पष्ट रूप से कहा था कि चबुआ पुलिस स्टेशन के पांच पुलिसकर्मी आरोपी व्यक्तियों के साथ उसके घर आए थे और पुलिस घटना की गवाह थी। अपनी जिरह में, वह स्वीकार करती है कि वह पीडब्लू-4 और पीडब्लू-5 के घर में प्रवेश नहीं की थी, जहाँ मृतक पर हमला किया गया था। वह बताती है कि पुलिस उसके पति और मृतक को पकड़ने आई थी। वह आगे उसने कहा कि उसने सभी अभियुक्तों को नहीं देखा और उसने मृतक पर हमले को नहीं देखा।

20. पीडब्लू-4 और पीडब्लू-5 वे पति और पत्नी हैं जो मृतक के पड़ोस में रहते हैं और उनके ही घर में मृतक रहते हैं। पीडब्लू-4 के साक्ष्य को विचारण न्यायालय द्वारा खारिज कर दिया गया है। हमले के तरीके के संबंध में, उसका साक्ष्य केवल उस हद तक प्रासंगिक है जब उसके घर में एक घटना हुई थी और हमले के तरीके के

बारे में नहीं। हालाँकि, वह कहती है कि वह शाम 4 बजे तक अपने घर में रही उस समय तक मृतक के शव के साथ पुलिस आई और शव को ले गई।

21. पीडब्लू-5 ने कुछ भी सामग्री नहीं बताई है।

22. पीडब्लू-6 वह डॉक्टर है जिसने शव परीक्षण किया था।

23. पीडब्लू-7 जाँच अधिकारी है।

24. कानूनी मुद्दों पर आते हुए, हम पहले इस मुद्दे पर विचार करते हैं कि क्या तथ्यों और परिस्थितियों में यह गैरकानूनी का मामला था। सभा और आगे अभियुक्त गैरकानूनी के सदस्य थे सामान्य वस्तु के साथ संयोजन किया जाता है या नहीं। आई. पी. सी. का अध्याय VIII सार्वजनिक शांति के खिलाफ अपराध से संबंधित है। धारा 141 से धारा 149 गैरकानूनी सभा की परिभाषा, गैरकानूनी सभा का सदस्य होना, घातक हथियारों से लैस गैरकानूनी सभा का हिस्सा होने की सजा और गैरकानूनी सभा का प्रत्येक सदस्य आई. पी. सी. की धारा 149 के तहत दंडित किए जाने वाले सामान्य उद्देश्य के अभियोजन में किए गए अपराध के लिए दोषी है। आई. पी. सी. की धारा 149 के अनुसार गैरकानूनी सभा के प्रत्येक सदस्य को सामान्य उद्देश्य का पता होना चाहिए। उनकी सभा और सामान्य उद्देश्य के अभियोजन में किए जाने की संभावना वाला अपराध भी।

25. इस फैसले के पहले भाग में सभी चश्मदीद गवाहों के साक्ष्य का विस्तार से वर्णन किया गया है। कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं हत्या करने और घायल पीडब्लू पर हमला करने का सामान्य प्रदर्श -2। किसी भी चश्मदीद गवाह द्वारा यह भी नहीं कहा गया है कि एक या कई या सभी अभियुक्तों द्वारा ऐसा कोई कथन था जिसे उन्हें समाप्त करना चाहिए। मृतक और घायल पीडब्लू-2 को चोट पहुँचाना। इस आशय का कोई सबूत नहीं है कि किसी भी आरोपी ने दूसरों को यह कहते हुए उकसाया कि उन्हें मृतक को खत्म करना होता है और घायलों पर हमला करना होता है (पीडब्लू-2)। इसके अलावा, चश्मदीद गवाह पीडब्लू-1, पीडब्लू-2 और पीडब्लू-3 ने स्पष्ट रूप से कहा है कि कम से कम पाँच पुलिस कर्मी आरोपी के साथ थे और यह कि वे बाहर खड़े थे और कथित अपराध में हस्तक्षेप नहीं करते थे। उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि यह समझना मुश्किल है कि गैरकानूनी सभा के सभी सदस्य सामान्य उद्देश्य से अवगत थे।

26. गैरकानूनी सभा के सिद्धांत को त्यागने का एक और कारण है। पीडब्लू-2 और पीडब्लू-3 ने कहा है कि पुलिस आरोपी के साथ मृतक और घायलों को गिरफ्तार करने आई थी। यदि यही उद्देश्य था और पुलिस अभियुक्त व्यक्तियों की मदद ले रही थी तो मृतक की हत्या के अपराध को करने के सामान्य उद्देश्य का तथ्य भी सामने नहीं आता है। यह हो सकता है कि आरोपी को ज्ञात सामान्य उद्देश्य मृतक और घायल पीडब्लू 2 को गिरफ्तार करना था क्योंकि उनके खिलाफ एक आरोपी पुलें फूकन द्वारा कुछ आपराधिक मामला दर्ज किया गया था। उपरोक्त विश्लेषण को देखते हुए, हम यह मानने में असमर्थ हैं कि आई. पी. सी. की धारा 149 के तहत दोषसिद्धि को बरकरार रखने के लिए एक गैरकानूनी सभा हुई थी।

27. अब इस मुद्दे पर आते हैं कि क्या नामित आरोपी वास्तविक हमलावर थे या नहीं और क्या पाँच अभियुक्तों, अर्थात् कुलेश्वर, पुलें फूकन, दुलें फूकन, मोजेन फूकनंद हरेन सैकिया का नाम दर्ज करने के लिए चश्मदीद

गवाहों के बयान पर भरोसा किया जा सकता है। दृढ़ विश्वास। एफ. आई. आर. में कुलेश्वर और पुलेन फूकन को हमले की कोई भूमिका नहीं सौंपी गई है। यह भूमिका मोजेन फूकन, दुलेन फूकन और हरेन सैकिया को सौंपी गई है। पीडब्लू-1 ने कुलेश्वर के पैर पर लोहे की छड़ से हमला करने और पुलेन फूकन के गर्दन पर हमला करने का नाम लिया है। जिरह में उसने कहा है कि दुलेन फूकन गर्दन पर हमला किया। पीडब्लू-2 ने कहा है कि कुलेश्वर ने मृतक को दाओ से मारा तो वह कहता है कि उसने नहीं देखा कि प्रदीप फूकन पर हमला किसने किया और बाद में कहता है कि यह पुलेन फूकन था जिसने गर्दन पर प्रहार किया था। पीडब्लू-3 ने कहा है कि कुलेश्वर ने लोहे की छड़ से हमला किया और दुलेन फूकन ने कुल्हाड़ी से गर्दन पर हमला किया। पीडब्लू-4 ने कहा है कि कुलेश्वर ने लोहे की छड़ से पैर पर प्रहार किया और फिर दुलेन फूकन ने कुल्हाड़ी से मृतक की गर्दन पर प्रहार किया। साक्ष्य की धारा 27 के तहत किसी भी आरोपी के कहने पर कोई बरामदगी नहीं हुई है। साक्ष्य के अनुसार, कुल्हाड़ी मृतक के शव पर छोड़ दी गई थी। उपरोक्त से जो स्पष्ट है वह यह है कि एफ. आई. आर. में कुलेश्वर का नाम शामिल नहीं किया गया था, लेकिन मृतक पर पहले लोहे की छड़ से हमला करने के चश्मदीद गवाहों ने लगातार उसका नाम लिया है। जहां तक पुलेन फूकन का संबंध है, उसका नाम पी. डब्ल्यू.-1 और पी. डब्ल्यू.-2 ने गर्दन पर हमला करने के लिए लिया है, जबकि पी. डब्ल्यू.-3 और पी. डब्ल्यू.-4 ने गले पर हमला करने के लिए दुलेन फूकन का नाम लिया है। इस प्रकार, चश्मदीद गवाहों के बयान में भौतिक विसंगति है।

28. साक्ष्य से ध्यान देने योग्य एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू पीडब्लू-1, पीडब्लू-2, पीडब्लू-3 और पीडब्लू-4 वह है जो कुलेश्वर द्वारा पुलेन फूकन और ओआरएस से मारे जाने के बाद होता है। एक लोहे की छड़, प्रदीप फूकन, मृतक को कमरे में प्रवेश करने के लिए संघर्ष करना पड़ा और वहाँ उसकी गर्दन पर हमला किया गया। जब अभियोजन पक्ष की कहानी के अनुसार ही प्रदीप फूकन ने कहा कि मृतक पड़ोसी के घर में घुस गया था, तो चश्मदीद गवाहों के लिए भी पीडब्लू-4 और पीडब्लू-5 के घर में प्रवेश करना और मामले को देखना बहुत मुश्किल होता। पीडब्लू-1 और पीडब्लू-3 ने यह नहीं कहा है कि वे उस कमरे में भी घुसे थे जहाँ हमला हुआ था। पीडब्लू-2 ने स्पष्ट रूप से कहा है कि जब उसने प्रदीप फूकन का पीछा करने की कोशिश की तो उसे आरोपी और बाहर खड़े पुलिस कर्मियों ने रोक दिया।

29. उपरोक्त साक्ष्य पूरे अभियोजन पक्ष की कहानी पर बहुत गंभीर संदेह पैदा करता है। यह काफी संभव है कि पुलिस कर्मियों के संबंधित पुलिस थाना मृतक और उसके भाई को गिरफ्तार करने के लिए वहां था और उस प्रक्रिया में कुछ प्रतिरोध के परिणामस्वरूप यह घटना हुई होगी। प्रदीप फूकन की मृत्यु का कारण। पीडब्लू-2 की चोटें साबित नहीं हुई हैं क्योंकि माना जाता है कि कोई चोट की रिपोर्ट नहीं थी। यहां तक कि एफ. आई. आर. के लेखक को भी पेश नहीं किया गया है और न ही हस्ताक्षर साबित हुए हैं। यह बहुत संभव है कि यह पुलिस द्वारा पूरी तरह से तैयार किया गया था। उन्होंने मृतक को गिरफ्तार करने की प्रक्रिया में हत्या को अंजाम दिया, और उसके बाद, दोनों पक्षों के बीच दुश्मनी को जानते हुए, आरोपी के खिलाफ एक झूठा मामला दर्ज किया। जाहिरा तौर पर इस कारण से, पूरी घटना के दौरान चबुआ पुलिस स्टेशन के पुलिस कर्मियों की उपस्थिति को समझाने के लिए कोई स्पष्टीकरण सामने नहीं आया है।

30. अभियोजन पक्ष ने खून से सना हुआ मिट्टी एकत्र करने के किसी भी भौतिक प्रदर्शन द्वारा घटना का स्थान स्थापित नहीं किया है। घटना का स्थान। यहां तक कि सामग्री प्रदर्शनी, कुल्हाड़ी, जिसे पुलिस द्वारा हिरासत में

लिया गया था, चाहे वह घटना की तारीख पर हो या उसके दो दिन बाद, को भी पेश नहीं किया गया है और न ही कोई साक्ष्य ने उस प्रभाव को जन्म दिया। यह अभी भी एक रहस्य है कि जांच अधिकारी ने अपने बयान में कैसे कहा है कि उसने उसके खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था। पाँच अभियुक्तों के रूप में आठ फरार थे और तीन और अभियुक्तों को गिरफ्तार करने और मुकदमा चलाने के बारे में आगे कोई बयान नहीं है, कैसे निचली अदालत ने 11 अभियुक्तों को दोषी ठहराने के लिए आगे बढ़ाया और केवल दो को फरार होना तय किया गया। यहां तक कि एफ. आई. आर. के लेखक से भी पूछताछ नहीं की गई है। यह अत्यंत प्रासंगिक था जब पीडब्लू-1 ने कहा कि उसे प्राथमिकी की सामग्री के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

31. उपरोक्त विश्लेषण से हमारा मानना है कि हालांकि प्रदीप फूकन की मृत्यु हत्या थी, लेकिन हम इस बात से आश्चर्य नहीं हैं कि अभियोजन पक्ष ने 634 के खिलाफ उचित संदेह से परे मामले को स्थापित किया है अभियुक्त अपीलार्थी। अपीलार्थी संदेह के लाभ के हकदार होंगे। तदनुसार अपील की अनुमति दी जाती है। दोषसिद्धि और सजा को दरकिनार कर दिया जाता है। अपीलार्थियों को तुरंत रिहा कर दिया जाता है। वे न्यायिक हिरासत में हैं। यदि वे किसी अन्य मामले में वांछित नहीं हैं तो उन्हें तुरंत रिहा किया जा सकता है।

32. लंबित आवेदन, यदि कोई हों, का निपटारा कर दिया जाता है।

निधि जैन

अपील की अनुमति

(कनिष्क सिंह और तमन्ना, एलसीआरएस द्वारा सहायता प्राप्त)

Translated, validated & Corrected by
PRIYANSHU GUPTA, ADV.
HIGH COURT OF CHHATTISGARH